Online Available at: www.multiarticlesjournal.com OPEN ACCESS ISSN: 2583-7397

International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary; 2023; 2(4): 29-33

Review Paper

भारतीय राजनीतिक चिन्तन तथा अरस्तू के विचारों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन

Author (s): मंजू D/o **श्री. रोहताश**[*1]

[*1]ग्राम- लुखी,ब्लॉक-नाहड़, रेवाड़ी, हरियाणा, भारत

Corresponding Author: * *मंजू*

सारांश:

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख आधार भारतीय राजनीतिक चिन्तन तथा अरस्तू के विचारों के मध्य समानताओं तथा असमनाताओं की जांच करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु अध्ययन उद्देश्यों को दो भिन्न भिन्न भागों में वर्गीकृत करके अध्ययन किया गया है है। इसके प्रथम भाग में पाश्चात्य विद्वान अरस्तू के राजनीतिक चिंतन का विवरण प्रस्तुत किया गया है, अरस्तू के राज्य की उत्पति सिद्धान्त, राज्य के संविधान संबंधी सिद्धान्त, शिक्षा तथा अंतरराष्ट्रीय संबंधों का विश्लेषण सम्मिलित है इसी प्रकार इन्ही बिंदुओं पर आधारित भारतीय राजनीतिक चिंतन का विश्लेषण भी इस अध्ययन के दूसरे भाग में किया गया है। यह अध्ययन इस बात की समीक्षा करता है कि भारतीय राजनीतिक चिंतन पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन से भी कई सदियों पुराना एवं प्रमाणित है।

Manuscript Information

Received Date: 11-06-2023
Accepted Date: 19-07-2023
Publication Date: 26-07-2023
Plagiarism Checked: Yes
Manuscript ID: IJCRM:2-4-9
Peer Review Process: Yes

How to Cite this Manuscript

मंजू. **भारतीय राजनीतिक चिन्तन तथा अरस्तू के विचारों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन**. International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary. 2023: 2(4):29-33

कूटशब्द: अरस्तू, भारतीय राजनीतिक चिंतन, सर्वज्ञ गुरु, कौटिल्य ,दास गिव

प्रस्तावना:

राजनीतिक चेतना तथा विशेषकर पाश्चात्य राजनीतिक विचारधारा राजनीतिक विज्ञान के जनक माने जाने वाले अरस्तू तथा प्लेटो के विचारों के चारों ओर ही घूर्णन करती हुए दिखाई पड़ती है। हालांकि भारत में भारतीय राजनीतिक चिंतन की शुरूआत प्राचीनतम वेद वेदांगो के काल से ही अस्तित्व में आ चुकी थी जिसका प्रथम चरण मुगल काल आते आते लगभग विलुप्त सा हो गया। इसी परंपरा का निर्वहन जारी रखते हुए ब्रिटिश कालीन सत्ता का परतंत्र होते हुए भी अनेकों भारतीय राजनीतिक चिंतकों ने इसे जीवंत रखने में अहम योगदान दिया। भारत में वैदिक काल से आधुनिक राजनीतिक चिंतकों में मनु, कौटिल्य, स्वामी विवेकानंद, अरविंद घोष, महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस, जवाहरलाल नेहरू, आचार्य विनोबा भावे, दादाभाई नौरोजी, विनायक दामोदर सावरकर, डॉ. अंबेडकर, मानवेंद्र नाथ राय, जे पी नारायण, आचार्य नरेंद्र देव तथा डॉ. राममनोहर लोहिया आदि ने प्रमुख रहे हैं। हालांकि ब्रिटिश कालीन सत्ता के अधीन भारत के

समय इस भ्रम को जोर शोर से फैलाया गया कि भारतीय चिन्तन केवल अति साधारण प्रकृति का है एवं इसमें कुछ भी ऐसा विशेष नही है जिसका उल्लेख किया जा सके।

कुछ पश्चिमी विद्वानों ने तो भारतीय राजनीतिक चिंतन को निरा आदर्शवादी और अव्यावहारिक तक बताया परंतु धीरे धीरे समय गुजरने के साथ साथ नए तथ्यों ने इस बात को प्रमाणित कर दिया कि भारतीय चिन्तन पाश्चात्य चिंतन से भी अत्याधिक पुराना एवं शाश्वत है। अनेकों प्रमाण इस बात की पुष्टि करते हैं कि भारत में अरस्तू और प्लेटो से भी कई सौ वर्ष पूर्व राजनीतिक चिन्तन के असीमित विवरण मौजूद रहे हैं।

इसी बात का समर्थन करते हुए मैक्सी कहते हैं कि, " हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत का राजनैतिक इतिहास यूरोप के राजनैतिक इतिहास से अधिक प्राचीन है और राजनैतिक विचारों की दृष्टि से निष्फल भी नहीं है।"

अध्ययन उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य भारतीय राजनीति चिंतन तथा पाश्चात्य राजनीतिक चेतना के प्रमुख विद्वान एवं दार्शनिक अरस्तू की राजनीतिक विचारधारा का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

अध्य्यन प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत अध्ययन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त ज्ञान को आधार बनाकर विश्लेषणात्मक अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया है।

अरस्तू की राजनीतिक विचारधारा की पृष्ठभूमि

अरस्तू पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन परंपरा का सर्वाधिक लोकप्रिय विद्वान था जिनका जन्म **384** ईसा पूर्व मैसेडोनिया में एक संभ्रांत परीवार में हुआ। मात्र **17** वर्ष की आयु में शिक्षण हेतु इन्हे एथेंस भेज दिया गया जहां महान प्लेटो के मार्गदर्शन में से इनका प्रशिक्षण संपन्न हुआ। अरस्तू को प्लेटो का सबसे बड़ा शिष्य होने के साथ ही प्लेटो का प्रमुख आलोचक भी माना जाता रहा है। हालांकि अरस्तू प्लेटो का आलोचक नहीं है बल्कि प्लेटो के विचारों की खामियों को दूर करने वाला विद्वान है।

अरस्तू को 'राजनीति विज्ञान का जनक' माना जाता है । अरस्तू ही वह पहले व्यक्ति थे जिनके द्वारा तत्कालीन मौजूदा संविधानों को आलोचनात्मक तथा व्यवस्थित रूप से विश्लेषण कर उन्हें वर्गीकृत किया गया । अरस्तू यथार्थवादी तथा उदारवादी परंपरा के विद्वान थे।

अरस्तू की महानता उनके जीवन से नही बल्कि उनके द्वारा रचित रचनाओं से स्पष्ट होती है। उनके गंभीर तथा प्रभावशाली लेखन के कारण ही मैक्सी उन्हें ' सर्वज्ञ गुरु' की उपाधि देते हैं जबकि दाँते द्वारा उन्हें ज्ञाताओ का गुरु' की संज्ञा दी है। अरस्तू की रचनाएं कल्पनाओं से कोसों दूर रहकर वास्तविकता से संबंध रखती हैं। अरस्तू की इसी यथार्थवाद के कारण ही उन्हें प्रथम राजनीतिक वैज्ञानिक भी कहा जाता है।

1. राज्य की उत्पत्ति

अरस्तू द्वारा रचित ग्रंथ ***पॉलिटिक्स*** में राज्य की उत्पत्ति के विषय में विस्तृत ज्ञान उपलब्ध है। अरस्तू की रचना ***पॉलिटिक्स*** के अनुसार Man is Social and Political Animal अत मनुष्य का विकास राज्य में ही संभव है। अरस्तू का अनुमान है कि राज्य ऐतिहासिक विकास का ही परिणाम है और मनुष्य इसकी इकाई है जिन्हे एक दूसरे से भिन्न भिन्न करके नहीं रखा जा सकता है। अरस्तू के अनुसार मनुष्य को प्रकृति ने इस प्रकार निर्मित किया है कि उसे अपनी बुनियादी आवश्यकताएं पूर्ण करने हेतु राज्य पर निर्भर रहना पड़ता है। अरस्तू के चिंतन में राज्य की उत्पति के विभिन्न विकास क्रम मौजूद है जिनमे सर्वप्रथम परिवार का स्थान आता है। परिवार रूपी इस समूह में पिता, माता, पुत्री, पुत्र और दासशामिल हैं। यह परिवार रूपी संघ या समुदाय मिलकर ग्रामों का निर्माण करते हैं और जब ग्रामों के समुदाय आपस में मिलते हैं तब राज्य का निर्माण होता है। परिवार मनुष्य की शारीरिक आवश्यकताओं की तथा ग्राम आर्थिक व धार्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन हैं।

2. राज्य का संविधान

अरस्तू के अनुसार संविधान राज्य का ही निर्धारक तत्व है। संविधान का वास्तविक स्वरूप ही राज्य के स्वरुप की पहचान कराता है। संविधान में वर्णित विधि सिद्धांत की संप्रभुता का होना अनिवार्य है। अरस्तू के अनुसार राज्य को तीन वर्गों में वर्गीकृत किया गया है –

1) नागरिक वर्ग : (अरस्तू के अनुसार राज्य का अभिन्न अंग नागरिक होते हैं जो प्राकृतिक साधन के रुप में विद्यमान हैं।)

2) मध्यम वर्ग : (अरस्तू इस वर्ग में वाणिज्य और उद्योग कर्ता को रखता है जिनके द्वारा नागरिक अधिकारों का आनंद लिया जाता है।)
3) दास वर्ग : (इस वर्ग के पास कोई भी न तो राजनैतिक अधिकार और न ही नागरिक अधिकार होते हैं।)

3. शिक्षा

अरस्तू शिक्षा को राज्य का अत्यंत महत्वपूर्ण कारक मानता है। किसी भी आदर्श राज्य में नागरिकों के अच्छे जीवन हेतु शिक्षा का एकाधिकार होना चाहिए। राज्य में शिक्षित व्यक्तियों का समूह शिक्षित परिवार, शिक्षित ग्राम तथा शिक्षित राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

4. अंतर्राष्ट्रीय संबंध

अरस्तू राज्य के अस्तित्व को बनाएं रखने एवं नागरिक आपूर्तियों को ध्यान में रखते हुए अपने आस पास के राज्यों के साथ अंतर्राष्ट्रीय संबंध स्थापित करने पर जोर देता है। अंतर्राष्ट्रीय संबंध न केवल नागरिकों आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक होंगे बल्कि युद्ध जैसी अपिरहार्य घटनाओं में भी सुरक्षित जीवन का परिवेश बनाएं रखने में सहायक हैं।

भारतीय राजनीतिक चिंतन की पृष्ठभूमि

प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन को वेदों, उपनिषदों और अन्य धार्मिक लेखों द्वारा महत्वपूर्ण रूप से दर्शाया गया है। अन्य स्मृतियों के साथ-साथ मनुस्मृति, प्रत्येक राजनीतिक संस्था और मानव जीवन के संपूर्ण परिदृश्य का लंबवत और क्षैतिज रूप से वर्णन करती है। इसी क्रम में कौटिल्य का अर्थशास्त्र चिन्तन के आधुनिक रुप का एक बेहतरीन प्रदर्शन है।

डा. ओम नागपाल के अनुसार," प्लेटो और अरस्तू से शताब्दियों पूर्व ही भारत में राजनीतिशास्त्र पर पर्याप्त लिखा जा चुका था। अरस्तु के समकालीन कौटिल्य, जिसे व्यावहारिक राजनीति का पिता कहा जा सकता हैं, के विचार इस बात के साक्षी हैं कि ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भारत कभी भी किसी से पीछे नहीं था।"

इन सब के बावजूद भारतीय राजनीतिक चिंतन के कुछ विशिष्ट लक्षण ऐसे भी प्रकाश में आए हैं जिनका सरोकार पाश्चात्य चिंतन के बिल्कुल विपरीत अथवा उलट पाया गया है, जिनके कारण ही भारतीय राजनीतिक चिंतन को पाश्चात्य विद्वान निरा आदर्शवादी तथा अपने से भिन्न परंपरा बताते रहे हैं। ये विशेषताएं उस समय के भारत की सामाजिक परिस्थितियों, आर्थिक प्रगतियों, राजनीतिक उथल-पुथल एवं बौद्धिक विकास के स्तर से प्रभावित थीं।

1. भारतीय राजनीतिक चिंतन में राज्य की उत्पत्ति

भारतीय राजनीतिक चिंतन में अरस्तू की भांति ही राज्य की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विवरण दिए गए हैं हालांकि इनमे एकरूपता का अभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। इन विवरणों में -

मनु के अनुसार- मनु दैवीय सिद्धांत का पक्षधर है। राज्य की उत्पत्ति तब हुई जब जीव एक-दूसरे से डरकर विभिन्न दिशाओं में बिखरे हुए थे, भगवान ने पूरी सृष्टि की सुरक्षा के लिए एक राजा की रचना की।

कौटिल्य के अनुसार - राज्य सात अंगों जैसे स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दण्ड और मित्र से मिलकर बना है।

कौटिल्य सामाजिक समझौते का पक्षधर रहा है।। हाब्स तथा रूसो की भांति राज्य की उत्पत्ति से पूर्व की प्राकृतिक दशा को वह अराजकता की संज्ञा देता है। कौटिल्य के अनुसार राज्य की उत्पत्ति तब हुई जब मत्स्य न्याय के कानून से तंग आकर लोगों ने मनु को अपना राजा चुना तथा अपनी कृषि उपज का छठा भाग तथा स्वर्ण का दसवा भाग उसे देना स्वीकार किया। इसके बदले में राजा ने उनकी सुरक्षा तथा कल्याण का उत्तरदायित्व सम्भाला।

इसके अलावा समस्त भारतीय विचारकों तथा स्मृतियों ने राजा की उत्पति, शक्तियाँ, कर्तव्य एवं उसकी स्थिति के संबंध में विवरण प्रस्तुत किए हैं । प्रजा को राज्याज्ञा मानने के संबंध में भी विचार किया है। राज्याज्ञा का औचित्य और किस सीमा तक प्रजा को राज्याज्ञा माननी चाहिए तथा कब राज्याज्ञा को स्वीकार करने से मना करना चाहिए, इन सभी प्रश्नों पर भी विचार किया हैं। इन सभी बातों से स्पष्ट होता है कि राजा का स्थान उच्च तो था परंतु सर्वोपरी नही था।

2. राज्य का संविधान

भारतीय राजनीतिक चिंतन परंपरा में राज्य में नागरिकों हेतु संविधान संबंधी विवरण मौजूद हैं -

राज्य को लोक कल्याण के अनेकों कार्य करने के प्रावधानों में तालाब कुओं का निर्माण व मार्गों का निर्माण जैसे अनेकों कार्य सम्मिलित थे। बाढ़ अथवा सूखा प्रभावित क्षेत्रों को आर्थिक प्रदान करना भी राज्य के नागरिक अधिकारों की सुरक्षा के भाव को दर्शाता है।

प्रजा को विद्रोह का अधिकार भी भारतीय राजनीतिक चिंतन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण बिंदु है जिसके कारण प्रताड़ित प्रजा निरंकुश राजा अथवा शासक का विद्रोह करने और उसे सत्ता से विहीन करने में पुरजोर विरोध कर सकती है।

प्रशासन के क्षेत्र में भी प्राचीन भारतीय राजनीति अत्यंत विकसित थी इनमें न्याय प्रशासन, न्यायिक प्रक्रिया, आय व्यय व्यवस्था, कर प्रणाली तथा सचिवालय आदि प्रमुख कानून शताब्दियों वर्ष पूर्व में ही अस्तित्व में आ चुके थे।

महाभारत व मनु के अनुसार," दण्ड ही शासक हैं।" दण्ड को धर्म कहा हैं क्योंकि यह हर व्यक्ति को उसकी मर्यादा में बनाये रखता हैं, दण्ड राज्य का आधार हैं।

कौटिल्य के अनुसार," दण्ड-नीति का न्यायोचित रूप में प्रयोग किया जाना आवश्यक हैं। यदि ऐसा नहीं किया जाता तो राज्य में अव्यवस्था तथा अराजकता फैल जाएगी।"

3. अंतर्राष्ट्रीय संबंध

पाश्चात्य विद्वान अरस्तू की भांति ही भारतीय राजनीतिक विद्वानों ने राज्यों के पारस्परिक संबंधों के विषय में भी अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। इनमें षड्गुण्य सिद्धांत मंडल सिद्धांत, दूत एवं चर व्यवस्था एवं सन्धि के सिद्धांत आदि महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं जो आज भी तर्कसंगत हैं।

कौटिल्य के अनुसार युद्ध व विजय द्वारा अपने साम्राज्य का विस्तार करने वाले राजा को अपने शत्रुओं की अपेक्षा मित्रों की संख्या बढ़ानी चाहिए, ताकि शत्राुओं पर नियंत्राण रखा जा सके।

4. शिक्षा/ राजनीतिक चिन्तन के स्रोत

- **वेद** - वेदों द्वारा राजा के अधिकारों, राजा प्रजा संबंधों तथा शासन से जुड़ी योजनाओं अथवा नीतियों का उल्लेख मिलता है।
- **उपनिषद**- तत्कालीन समाज और शासन व्यवस्था का उल्लेख मिलता है।
- **महाकाव्य** - इनमे रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों में भगवान राम और कृष्ण के चरित्र चित्रण द्वारा संपूर्ण सामाजिक चित्र का वर्णन, राजा के अधिकारों, राजधर्म आदि का उल्लेख मिलता है।
- **स्मृतियां**- वर्णाश्रम, धर्म, राजा के कर्तव्य आदि का उल्लेख मिलता है।
- **जैन साहित्य/बौद्ध साहित्य** - जैन साहित्य में आचार्य हेमचंद्र द्वारा लिखित "परिशिष्ट पर्वन" में महावीर के काल से मौर्यकाल तक का संपूर्ण विवरण मिलता है। इसी प्रकार बौद्ध साहित्य द्वारा सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा आर्थिक व्यवस्था का ज्ञान मिलना है।
- **अर्थशास्त्र**- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राजा को तत्वज्ञान एवं वेदों का अध्ययन करने का सुझाव सम्मिलित है।
- **शिलालेख**- प्राचीन पत्थर एवं तांबे के शिलालेख तत्कालीन राजनीतिक जीवन एवं प्रशासनिक व्यवस्था का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

समानताएं

1. अरस्तू का राजनीतिक चिन्तन तथा भारतीय राजनीतिक चिंतन दोनों ही राज्य के अंतर्गत मनुष्य को केंद्र बिंदु मानते हैं। साथ ही मनुष्य को सामाजिक प्राणी की संज्ञा देते हैं।
2. दोनो ही चिंतन परंपराएं वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धतियों पर आधारित है।
3. दोनों ही चिंतन परंपराएं पारिवारिक संघ को महत्व देते हैं तथा पारिवारिक समुदायों को राज्य की उत्पति का आधार मानते हैं।
4. भारतीय एवं अरस्तू के राजनीतिक चिंतन की एक समानता यह भी है कि इनमें राज्य को विशेष महत्व दिया गया है।
5. भारतीय एवं अरस्तू के राजनीतिक चिंतन में दंड तथा न्याय के सिद्धांत का प्रावधान नागरिक जीवन की बेहतरी को दर्शाते हैं।
6. भारतीय एवं अरस्तू के राजनीतिक चिंतन में नागरिकों की शिक्षा एवं जागरूकता पर विशेष जोर दिए जाने की बात कही गई है ताकि एक आदर्श राज्य की स्थापना की जा सके।

असमानताएं

1. भारतीय राजनीतिक चिंतन केवल भारत के राजनीतिक चिंतन पर ही आधारित एक सीमित चिंतन है जबकि अरस्तू का राजनीतिक चिंतन यूनान के साथ साथ पश्चिम के कुछ और देशों के तत्कालीन विचारधाराओं पर भी आधारित है।
2. भारतीय राजनीतिक चिंतन का प्रमुख के केंद्र धर्म और आध्यात्म पर आधारित है जबकि अरस्तू का राजनीतिक चिंतन भौतिक वाद पर आधारित है।
3. भारतीय राजनीतिक चिंतन में कुछेक विचारकों ने धर्म को राजनीति का ही हिस्सा माना है जबकि अरस्तू धर्म को राजनीति का हिस्सा नहीं मानता है।
4. एक ओर जहां भारतीय राजनीतिक चिंतन राज्य में राजा को सर्वोपरी मानता है तो वहीं दूसरी ओर अरस्तु का राजनीतिक चिंतन राज्य में मनुष्य को केंद्र बिंदु मानता है।
5. प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन का हिंदू आध्यात्म की ओर झुकाव दिखाई देता है परंतु अरस्तू के अनुसार राज्य एवं मनुष्य प्राकृतिक रुप से विकसित हुऐ हैं।
6. अरस्तू का राजनीतिक चिंतन स्वयं के अनुभवों अथवा स्वयं की अपनी विचारधारा पर आधारित है जबकि भारतीय राजनीतिक चिंतन के स्रोतों के रुप में सदियों प्राचीन वेद वेदांगो को आधार बनाया जाता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का विष्लेषण करने के पश्चात यह सिद्ध होता है कि भारत में राजनीति के अनेक सिद्धांतों का पूर्व ज्ञान था तथा राजशास्त्र को वैज्ञानिक आधार पर विकसित किया गया था। कुछ विद्वानों का मानना है कि भारतीय चिंतन ने पश्चिमी चिंतन को प्रभावित किया है। इसके सर्वोत्तम उदाहरण के रुप में लंदन विश्वविद्यालय के **प्रो. डरविक** ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि जो व्यक्ति प्लेटो की रिपब्लिक को समझना चाहे उसे हिंदू विचारधारा पहले जानना चाहिए। इस प्रकार यह अध्ययन भारतीय राजनीतिक चिंतन की प्राचीनता को तो प्रदर्शित करता ही है साथ ही इसकी व्यापकता का भी प्रमाण प्रस्तुत करता है । प्राचीन शिलालेखो, सिक्कों, ताम्र पत्रों पर वर्णित तत्कालीन प्रशासन व्यवस्ता, न्याय व्यवस्था, दंड संहिता, गुप्तचर व्यवस्था आदि ऐसी विशिष्ट विशेषताएं भारतीय राजनीतिक चिंतन को पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन से अलग बनाती हैं।

संदर्भ सूची:

1. प्रो.जीवन मेहता, भारतीय राजनीतिक चिन्तन, एसबीपीडी प्रकाशन, c2021
2. डॉ जे सी जोहरी, राजनीतिक चिंतन, एसबीपीडी प्रकाशन, 2022
3. अरुण कुमार, भारतीय राजनीतिक चिन्तन, एसबीपीडी प्रकाशन, 2021
4. ओम प्रकाश बक्शी, अरस्तू का राजनीतिक चिंतन, c1979
5. सुश्री के. अनुराधा, डॉ. डी. ई. बेनेट, भारतीय और पश्चिमी दर्शन का एक तुलनात्मक अध्ययन, जर्नल ऑफ क्रिटिकल रिव्यूज, 8(2);2021
6. कुमार सुकेश, अरस्तू, प्रभात प्रकाशन, c2018
7. राजनीतिक विचार एवं विचारधाराएं, दृष्टि आईएएस (https://www.drishtiias.com/hindi/images/pdf/%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0)
8. थॉमस पैंथम, केनेथ एल ड्यूश, आधुनिक भारत में राजनीतिक विचार, सेज पब्लिशिंग इंडिया, c2017
9. स्टीफन एवरसन , राज्य की नींव पर अरस्तू, जर्नल ऑफ पॉलिटिकल स्टडीज; 36(1), 89-101, 1988
10. ओलिवेरा जेड मिजुस्कोविक, अरस्तू की राज्य की अवधारणा , सुकरात 4(4), 13-20, 2016.

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.